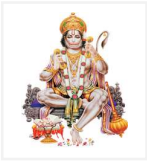

श्री संकट मोचन हनुमान अष्टक अर्थ सहित

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारों।

ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।

देवन आनि करी बिनती तब, छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-1॥

अर्थ : हे हनुमान जी! आप बालक थे तब आपने सूर्य को अपने मुख मे रख लिया जिससे तीनों लोकों मे अंधेरा छा गया। इससे संसार भर मे वियप्त छा गई और उस संकट को कोई भी दूर नहीं कर सका। देवताओं ने आकार आपसे विनती करी तब आपने सूर्य को मुक्त किया। इस प्रकार संकट दूर हुआ। हे हनुमान जी ! संसार मे ऐसा कौन है जो नहीं जनता कि आपका नाम संकट मोचन है।

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।

चौंकि महामुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार बिचारो।

कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-2॥

अर्थ : बालि के डर से सुंग्रीव पर्वत पर निवास करते थे, उन्होने श्री रामचन्द्र को आते देखा तो आपको पता लगाने के लिए भेजा। आपने अपना ब्राह्मण रूप धारण करके श्री रामचन्द्र जी से भेंट की और उनको अपने साथ लिवा जाये ऐसा करके आपने सुग्रीव के शक और शोक का निवारण किया। हे हनुमान जी ! संसार मे ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।

जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो।

हेरी थके तट सिन्धु सबे तब, लाए सिया-सुधि प्राण उबारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-3॥

सुग्रीव ने अंगद के साथ सीता जी की खोज के लिए अपनी सेना को भेजते समय कह दिया था की यदि बिना पता लगाए वापस आए तो जीवित नहीं बचोगे, सब ढूंढ के हार गए तब आप समुन्द्र तट से छलांग लगा दी और सीता जी का पता लगाकर ही वापस आए और सबके प्राण बचा लिए। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

रावण त्रास दई सिय को सब, राक्षसी सों कही सोक निवारो।

ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाए महा रजनीचर मारो।

चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-4॥

जब रावण ने सीता जी को भय दिखाया और कष्ट दिया और सब राक्षसियों से कहा की सिताजी को मनावें, हे महावीर आपने उसी समय पहुचकर तमाम राक्षसों को मार गिराया। सिताजी ने अशोक वृक्ष से अग्नि मांगी (स्वयं को भस्म करने को) परंतु अपने उसी वृक्ष से राम जी की अंगूठी डाल दी जिससे सीताजी की चिंता दूर हुई। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

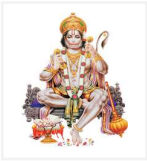

श्री संकट मोचन हनुमान अष्टक अर्थ सहित

बान लाग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सूत रावन मारो।

लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो।

आनि सजीवन हाथ दिए तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-5॥

रावण के पुत्र मेघनाथ ने बाण मारा जो लक्षमन जी की छाती पर लगा और उनके प्राण संकट मे पड़ गए। तब आप ही सुषेण वैद्य को घर सहित उठा लाये और द्रोणाचल पर्वत सहित संजीवनी बूटी ले आए जिससे लक्ष्मण जी के प्राण बचे। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

रावन जुध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।

आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-6॥

रावण ने घोर युद्ध करते हुये सबको नाग पाश मे बांध लिया तब श्री रघुनाथ समेत सारे डाल मे मोह छा गया की यह तो बड़ा भरी संकट है। उस समय, हे हनुमान जी ! आपने गरुड जी को लाकर बंधन को कटवा दिया जिससे संकट दूर हुआ। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

बंधू समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो

देबिन्हीं पूजि भलि विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो

जाये सहाए भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-7॥

जब अहिरावन श्री रघुनाथ जी को लक्ष्मण सहित पाताल लोक ले गया और भलीभाँति देविजी की पूजा करके सबके परामर्श से यह निश्चय किया की इन दोनों भाइयों की बलि दूँगा, उसी समय आपने वहाँ पहुँचकर अहिरावन को सेना समेत मार गिराया। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता।

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो

कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होए हमारो

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥को-8॥

संकटमोचन नाम तिहारो - संकटमोचन नाम तिहारो - संकटमोचन नाम तिहारो

हे महावीर आपने देवों के बड़े बड़े कार्य किए हैं अब आप देखिये और सोचिए की मेरे जैसे दीन हींन का ऐसा कौन सा भारी संकट है जो आप दूर नहीं कर सकते। हे महाबली हनुमान जी! हमारा जो कुछ भी संकट हो आप उसे शीघ्र ही दूर कर दीजिये। हे हनुमान जी! ऐसा कौन है जो आपका संकटमोचन नाम नहीं जानता-3

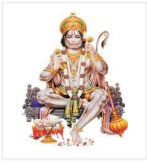

श्री संकट मोचन हनुमान अष्टक अर्थ सहित

-: दोहा :-

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर,

बज्र देह दानवदलन, जय जय जय कपि सूर।

आपका शरीर लाल है, आपकी पूँछ लाल है और आपने लाल सिंदूर धारण कर रखा है आपके वस्त्र भी लाल है। आपका शरीर वज्र है और आप दुष्टों का नाश करने वाले हैं। हे हनुमान जी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो ॥

(इति श्री संकट मोचन हनुमान अष्टक)